1. [illegible] पृष्ठ 1

सामाजिक स्तरीकरण के अवधारणा को स्पष्ट करते हुए सामाजिक स्तरीकरण के मुख्य आधार की विवेचना करें। Explain the concept of social stratification and discuss its main basis.)

→ मानव समाज में व्यक्तियों के बीच समानता ही नहीं पायी जाती वरन अनेक भिन्नतायें भी देखने को मिलती है। समाज के विभिन्न सदस्यों में ऊँच-नीच की स्थिति शारीरिक शक्ति, परिवारिक स्थिति, सम्पत्ति, संस्कृति, बुद्धि, योग्यता, कार्यक्षमता, विभिन्नता के आधार पर पायी जाती है इसे ही सामाजिक स्तरीकरण कहते हैं। कुछ समाजों में यह विभिन्नता जाति-जन्य एवं आनुवंशिक (heredity) होती है, जबकि कुछ समाजों में व्यक्तियों की कुशलता, शारीरिक शक्ति और योग्यता के आधार पर इसमें परिवर्तन होते रहते हैं पहली स्थिति को हम जातिगत स्तरीकरण (Caste stratification) कहते हैं, और दूसरी स्थिति को वर्ग-गत स्तरीकरण (Class stratification) कहते हैं।

Murray (मूरे) ने सामाजिक स्तरीकरण को स्पष्ट करते हुये कहा कि " स्तरीकरण समाज का वह क्रमबद्ध विभाजन है जिसमें सम्पूर्ण समाज को कुछ उच्च अथवा निम्न सामाजिक इकाईयों में विभक्त कर दिया गया हो।" इस परिभाषा से स्पष्ट है कि सामाजिक स्तरीकरण का रूप एक सीढ़ी के समान है जिसमें कुछ समूह ऊपर होते हैं और इसकी तुलना में नीचे।

सदरलैण्ड और वुडवर्ड (Sutherland and Woodward) ने अपनी पुस्तक Introductory Sociology में कहा है कि स्तरीकरण केवल अन्तःक्रियाओं अथवा विभेदीकरण की ही एक प्रक्रिया है जिसमें कुछ व्यक्तियों की तुलना में ऊँच स्थिति प्राप्त होती है।

सामाजिक स्तरीकरण की परिभाषा देते हुए हुए जिसबर्ट (P. Gisbert) ने कहा कि " सामाजिक स्तरीकरण समाज का समूहों अथवा कोटियों में स्थायी विभाजन है, जो समूह अथवा कोटियाँ एक दूसरे से श्रेष्ठता एवं निकृष्टता के संबंधों से जुड़े रहते हैं। इस परिभाषा से स्पष्ट है कि सामाजिक स्तरीकरण की इकाइयाँ अलग अलग देशों और समाजों में अलग अलग हो सकती है परन्तु इसके पीछे